International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) Impact Factor : 2.521 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – V, Issue – IV December 2016

नवसारी जिले के बी.एड्. कालेजोमें दो साल बी.एड्. प्रशिक्षणार्थीओं के इन्टर्नशीप कार्यक्रम सम्बन्धित अभिप्राय

शोधकर्ता : डो. मनसुखभाई एन. पटेल,
एशोसियेट प्रोफेशर,
श्रीरंग शिक्षण महाविद्यालय, बीलीमोरा.

Abstract :

भारतक सरकार के मानव संशाधन विकास मंत्रालयने युनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमिशन और नेशनल काउन्सिल फोर टीचर एज्युकेशनकी स्थापना करके शिक्षामें सुधार का बिडा उठाया है । कालेजोमें निर्वाह के लिए सरकार पर्याप्त धन दे रही है किन्तु आबादी के बढते शिक्षा के प्रति लोगों की जागरुकता भी बढी । शिक्षा संस्थानों की वृद्धि हुई । विभिन्न विद्याशाखाओं के खुलते छात्रों को तालीम के लिए अब अपने राज्य से बहार जाना नहीं पडता है ।

समाजमें सुधार की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है । शिक्षा के बिना यह संभव नहीं है, शिक्षा और शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार लगातार होना चाहिए । शिक्षा देशके विकास का आधार है अतः एन.सी.टी.ई. उच्च शिक्षा में सुधार के लिए कदम उठा रही है । वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटीमें सन् २०१५ से दो. वर्ष बी.एड्. का कदम उठाकर अभ्यासक्रमकी रचना की, एज्युकेशन फेकल्टी ने ३० प्रतिशत इन्टर्नल और ७० प्रतिशत एक्सटर्नल का प्रारुप तैयार करके लागु किया । इसके तहत इन्टर्नशीप कार्यक्रम वर्ष-२ के प्रशिक्षणार्थीओं के लिए सेमेस्टर-३ और सेमेस्टर-४ में रखा गया । गुजरात सरकार और सी.टी.इ. जिला शिक्षा तालीम भवनों के द्वारा माध्यमिक प्राथमिक विद्यालयों के आचार्य और शिक्षकों की गुणवत्ता सुधारके कार्यक्रम आए दिन आयोजित होते रहते हैं । फिरभी तालीमार्थी को प्रशिक्षणका अधिक महावरा देने हेतु एन.सी.टी.ई के मार्गदर्शन अनुसार इन्टर्नशीप पहले सप्ताह भरके लिए हुआ करती थी वहाँ अवधि बढाई । इस स्थितिमें इन्टर्नशीप जाकर आए हुए प्रशिक्षणार्थीयों के क्या प्रतिभाव है यह जानने हेतु शोधकर्ताने एक छोटा सा प्रयोग किया, जिसमें नवसारी जिले के चार कालेजोंके करीब १० प्रशिक्षणार्थीओं के पास अभिप्राय लिए गए । इनका मानना है कि यह कार्यक्रम अच्छा है । अध्यापन कार्य, सह अभ्यास प्रवृत्तियाँ और छात्रों से काम लेनेकी स्वतंत्रता होने से स्वयं परिपक्व एवं पुख्त बने है । अभिव्यक्ति, सभा संचालन आदिमें निखार होने की बात को समर्थन मिला है ।

- **भूमिका :**

सन् १९९५ में स्थापित एन.सी.टी.ई के रुल्स एन्ड रेग्युलेशन के अनुसार प्रशिक्षण कालेज चल रहे है । बी.एड्. कालेजोमें प्रशिक्षक भर्ती, प्रशिक्षणार्थी प्रवेश से लेकर परिणाम घोषित होने तक सभी कार्यक्रमो के लिए एन.सी.टी.ई. द्वारा शर्ते लागुं की गई हैं । उसी के अनुसार वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी के एज्युकेशन फेकल्टीमें भी बदलाव किए गए । मार्गदर्शक के अनुसार बी.एड्. तालीम वर्ष २०१५ से दो साल की गई । इसी के चलते प्रशिक्षण कालेजों में इन्टर्नल-एक्सटर्नल के मानकमें भी बदलाव आया । एक साल पहले तक बी.एड्. तालीम सालभर के लिए ही हुआ करती थी तब तक प्रशासन के सामने अधिक दिक्कतें नही थी, लेकिन प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे ही दो सालमें बँट गया, कई समस्याएँ उठ खडी हुई । शोधकर्ताने गौर से सभी कार्यक्रमों पर दृष्टि रखकर इन्टर्नशीप कार्यक्रम पर फोकस करके कुछ पहलुओं के समाधान खोजना चाहा । क्योंकि प्रशिक्षणार्थीओं को माध्यमिक विद्यालय या प्राथमिक विद्यालयों में भेजकर इन्टर्नशीप करवाया जाता है । ग्रान्टेड कालेज हो या सेल्फ फायनैंन्स कालेज हो, सभी कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं को इस कार्यक्रम संपन्न करना होता है । इन्टर्नशीप प्रशिक्षण दौरान स्कूलके संपर्क में रहकर अध्यापनकार्य, शैक्षिक उपकरणों का प्रयोग, स्कूल अध्यापकों के लेशन, ओब्जर्व करना, सहयोगी तालीमार्थीओ से मिलकर स्कूल के बच्चो को सहअभ्यास प्रवृत्तिओं में जोडना, स्कूल आचार्य और मेन्टर टीचर के मार्गदर्शन के अनुरुप काम करना, इन सभी कामों के करते समय अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पडता है । इसको मध्येनजर रखकर दो साल बी.एड्. के इन्टर्नशीप कार्यक्रममें प्रशिक्षणार्थीओं अध्यापन कार्य और सहअभ्यास प्रवृत्तियाँ करते हुए किन किन समस्याओं का सामना करना पडा इसका समाधान ढूँढने हेतु शोधकर्ताने नवसारी जिले के बी.एड्. कालेजों में दो साल बी.एड्. प्रशिक्षणार्थीओं के इन्टर्नशीप कार्यक्रम सम्बन्धित अभिप्राय विषय पर संशोधन करना चयन किया था ।

- **शोधकार्य की समस्या :**

शोधकर्ताने नीचे दी गई समस्या का चयन किया था ।

नवसारी जिले के बी.एड्. कालेजोमें दो साल बी.एड्. प्रशिक्षणार्थीओं के इन्टर्नशीप कार्यक्रम सम्बन्धित अभिप्राय

- **शोधकार्य के उदेश्य :**

शोधकार्य जटिल समस्या का समाधान ढूँढने हेतु होता है, शोधकर्ताने समस्या का हल

ढुँढने के लिए निम्न जैसे उद्देश्य तय किए थे ।

- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं के अध्यापन कार्य के बारेमें जानकारी प्राप्त करना ।
- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं के कक्षाध्यापन में किये गए प्रयोगों के बारेमें जानकारी हांसिल करना ।
- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं के इन्टर्नशीप कार्यक्रमके दौरान स्कूल के सहयोग के बारे में माहिती प्राप्त करना ।
- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के इन्टर्नशीप कार्यक्रम दौरान सहअभ्यास प्रवृत्तियों के बारेमें जानकारी पाना ।
- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम के बारेमें अपने अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त करना ।
- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं के स्कूली छात्रों के सहयोग के बारे में जानकारी प्राप्त करना ।
- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं के स्कूल के मेन्टर टीचर के मार्गदर्शन के बारे में जानकारी प्राप्त करना ।

- **शोधकार्य के प्रश्न :**
  - नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं इन्टर्नशीप कार्यक्रम के दौरान अध्यापनकार्य किस प्रकार करते थे ?
  - नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओंने इन्टर्नशीप कार्यक्रम के दौरान कैसे प्रयोग किये थे ?
  - नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं को इन्टर्नशीप कार्यक्रममें स्कूल की और से कैसा सहयोग मिला था ?
  - नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओंने इन्टर्नशीप कार्यक्रममें कैसी सहअभ्यास प्रवृत्तियाँ की थी ?
  - नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीको सांस्कृतिक कार्यक्रममें कैसे अध्यापन अनुभव मिले थे ?
  - नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थी इन्टर्नशीप के दौरान स्कूल छात्रों से कैसा

सहयोग मिला था ?

- नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों के प्रशिक्षणार्थीओं को इन्टर्नशीप कार्यक्रम के दौरान स्कूल मेन्टर की तरफसे कैसा मार्गदर्शन मिला था ?

- **शोधकार्य का महत्व :**

Nessecity is The mother of Invention के अनुसार प्रस्तुत शोधकार्य कई माईनोमें महत्त्व रखता है । बी.एड्. शिक्षकों की बेरोजगारी बहुत है, यह प्रशिक्षण कार्यक्रम जब से सेल्फ फायनेन्स कालेजोंको मंजूरी दी गई है प्रवेशार्थीयों को अलग अलग बहाने बनाकर लूटा जा रहा है । कार्य्रक्रमकी गुणवत्ता पर भी शक हो रहा है ऐसे में दो साल का बी.एड्. जिसमें करीब सत्रह सप्ताह का इन्टर्नशीप कार्यक्रम जिसके दौरान तालीमार्थीको ठोस तालीम मिलनी चाहिए । जिस दृष्टि से निम्न मुद्दो में शोधकार्य का महत्व देखने को मिलता है ।

- प्रशिक्षणार्थी को इन्टर्नशीप के दौरान स्कूली प्रशासन का प्रत्यक्ष अनुभव मिलेगा ।
- बी.एड्. प्रशिक्षणार्थीको इन्टर्नशीप के अध्यापन कक्षाध्यापन की समस्याओं को समझने और सुलझााने का अवसर प्राप्त होगा ।
- इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थी अपनी पद्धतिमें नये नये प्रयोग कर पायेंगे ।
- इन्टर्नशीप कार्यक्रम मेन्टरकी निगरानी में होने की वजह से तालीमार्थी से गलतियाँ होने की गुँजाइश नहीं रहती ।
- इन्टर्नशीप कार्यक्रम से प्रशिक्षणार्थी को प्रायोगिक पाठ देनेकी गुणवत्तामें सुधार होगा ।
- इस कार्यक्रम द्वारा समाजको जैसा शिक्षक चाहिए वैसा तैयार करनेकी सहलियत मिल पायेगी ।
- इन्टर्नशीप कार्यक्रमकी अवधि लम्बी होने से तालीमार्थीके आत्मविश्वास में बढोतरी होगी ।
- प्रस्तुत शोधकार्य बी.एड्. कालेजों के अध्यापक, आचार्यो एवं शिक्षा विभाग के प्रशासकों को उपयोगी होगा ।
- यह शोधकार्य अनुगामी प्रशिक्षणार्थीयों के लिए अधिक महत्व रखेगा ।

- **शोधकार्य की मर्यादाएँ :**

संशोधन बहुत बडा होता है । इसमें समय पैसा और परिश्रम लगता है । प्रत्येक संशोधनकी सीमा होती है । शोधकर्ता के लिए समय और व्यय की दृष्टि से प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निम्न जैसी सीमाएँ बनी रही थी ।

- प्रस्तुत शोधकार्य नवसारी जिलेकी बी.एड्. कालेजों में किए जा रहे इन्टर्नशीप कार्यक्रम तक ही सीमित था ।
- जिस शोधकार्य में बी.एड्. वर्ष-२ के सिर्फ १०० प्रशिक्षणार्थीयों को ही प्रयोगपात्र रुपमें शामिल किया गया था ।
- प्रस्तुत शोधकार्य इन्टर्नशीप में गए हुए प्रशिक्षणार्थीयों के सिर्फ अभिप्राय ही लेना था ।
- प्रस्तुत शोधकार्यमें माहिती लेने हेतु विभिन्न उपकरणों में से स्वनिर्मित अभिप्रायावलि का उपयोग किया गया था ।
- इस शोधकार्यमें काईवर्ग मूल्य, प्रतिशत, अग्रताक्रम जैसे अंकशास्त्रका ही उपयोग किया गया था ।

- **उपकरण का निर्माण :**

शोधकार्यमें माहिती इकट्ठा करनेके लिए उपकरण की आवश्यकता रहती है । उपकरण जितना सशक्त हो इतना ही माहिती पर्याप्त और सही मिलती है । बाजार में तैयार उपकरण उपलब्ध रहते है जिससे माहिती एकत्रिकरण हो सके किन्तु शोधकार्य के अनुरुप उपकरण उपलब्ध नहीं है तो शोधकर्ताको स्वयं निर्माण करना पडता है । अत: ४० विधानोवाली एक अभिप्रायावलि का शोधकर्ताने निर्माण किया ।

- **व्यापविश्व और नमूना चयन :**

शोधकार्यमें नमूना चयन महत्त्वपूर्ण होता है । शोधकर्ताने दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी के सात जिलोंमें आए हुए बी.एड्. कालेजोंमें से नवसारी जिले के सरकारी, ग्रान्टेड और स्वनिर्भर ऐसे कुल मिलाकर चार कालेज आए हुए है । प्रस्तुत शोधकार्य के लिए वी.एन. एस.जी.यु.के साभी कालेज व्यापविश्व और नवसारी जिले के सभी बी.एड्. कालेज के वर्ष दो में तालीम ले रहे १०० प्रशिक्षणार्थी नमूना है ।

- **माहिती एकत्रिकरणकी रीत :**

माहिती एकत्रिकरण के लिए शोधकर्ताने रुबरु दो कालेजों के प्रिन्सिपाल से सम्पर्क करके अभिप्रायावलि भरवाने की मंजूरी ली और प्रशिक्षणार्थीओ से अभिप्रायावलि करवाई । और अन्य कालेजोंमें मित्रों और कालेज के प्रशिक्षणार्थीयों से अभिप्रायावलि भरवाकर मँगवाई ।

- **माहिती वर्गीकरण (Interpretation) की रीत :**

माहिती एकत्रिकरण के बाद शोधकर्ताने आवृत्ति वितरण, काईवर्ग मूल्य, प्रतिशत निकालना आदि अंकशास्त्रीय गिनती की और हरेक विधानका वर्गीकरण किया ।

- **शोधकार्य के तारण (Findings of Research work) :**
  - इन्टर्नशीप के दौरान प्रशिक्षणार्थीयों को अध्यापन के लिए पर्याप्त समय मिला था ।
  - इन्टर्नशीप में कक्षाध्यापन के दौरान प्रशिक्षणार्थीओंने छात्रोंको विभिन्न पद्धतियाँ और प्रयुक्तियों से पढाया था ।
  - इन्टर्नशीप कार्यक्रम से बहुधा तालीमार्थीओं को अपने कार्य से संतोष मिला था ।
  - इन्टर्नशीप के दौरान शैक्षणिक उपकरणों का प्रयोग किया गया था ।
  - इन्टर्नशीप के कार्यक्रममें हर तालीमार्थीयोंने प्रार्थनासभा का संचालन, समाचार, सुविचार, भजन–गीत आदिमें हिस्सा लिया था ।
  - इन्टर्नशीप के दौरान वार्गखंड अध्यापन कार्य में छात्रों की ओर से पूरा सहयोग मिला था ।
  - कार्यक्रमके समय हररोज दो तास सहअभ्यास प्रवृत्तियोंके लिए दिया जाता था ।
  - स्कूल में स्वाध्यायपोथी, प्रयोगपोथी, रोजनीशि, निबंध की कापी आदि के जाँचकार्यका अनुभव मिला था ।
  - इन्टर्नशीप में स्कूलने तालीमार्थीयोंको छूट्टियों के लिए मनाई की थी ।
  - स्कूल के मेन्टर हर तास का अध्यापन कार्य देखने नहीं आऐ थे ।
  - इन्टर्नशीप कार्यक्रम के दौरान पूरी स्कूलके बच्चों को प्रवृत्तिओं भी सामिल करने से मना किया था ।
  - इन्टर्नशीप में स्कूली प्रशासनका सहयोग मिला था ।
  - स्कूल के आचार्य और स्टाफ के पूरे सदस्योंने तालीमार्थीयों से हंमेशा मददकी तत्परता दिखाई थी ।
  - इन्टर्नशीप कार्यक्रम के अंतिम दिन बिदाय के समय छात्र भावविभोर हो गए थे ।
  - इन्टर्नशीप कार्यक्रमकी अवधि कम होनी चाहिए ।

- **उपसंहार :**

नेशनल काउन्सिल ओफ टीचर एज्युकेशन ने बी.एड्. दो वर्ष का पाठ्यक्रम दाखिल किया है । जो एक तरह से ठीक है । बी.एड्. में दाखिला पानेवाले प्रशिक्षणार्थीयोंके अभिप्रायो से पता चलता है कि पढाई के लिये कम और अन्य प्रवृत्तियों के लिए समय ज्यादा रखा गया है । शिक्षक तालीममें इन्टर्नशीप महत्वपूर्ण कदम है फिरभी समय सारिणी में थियरी और प्रायोगिक कार्यका संतुलन बना रहे इसका ध्यान रखा जाना चाहिए ।

- **साहित्य निर्देश (References) :**

- व्यास, हरिश्चन्द्र (२०१०). जनसंख्या, प्रदूषण और पर्यावरण. विद्याविहार, कुचा दखनीराम, , दरियागंज, नई दिल्ली.
- नवनीत. (फरवरी २०१४). पी. वी. शंकरतकुट्टी भारतीय विद्याभवन, क.मा. मुनशीमार्ग, मुंबई.
- દેસાઈ એચ. જી. અને દેસાઈ કે. જી. (૧૧૯૨), *'સંશોધન પદ્ધતિઓ અને પ્રવિધિઓ '.* અમદાવાદ : યુનિવર્સિટી ગ્રંથનિર્માણ બોર્ડ.
- શાહ ડી. બી. (૨૦૦૪). *'શૈક્ષણિક સંશોધન'.* અમદાવાદ : યુનિવર્સિટી ગ્રંથનિર્માણ બોર્ડ, ગુજરાત રાજ્ય.
- बत्रा दीनानाथ (१९९२). शिक्षाका भारतीयकरण. लखनउ विद्याभारती, अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान.
- National Council for Teacher Education, New Delhi 1998.